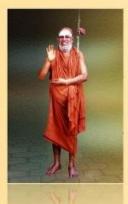
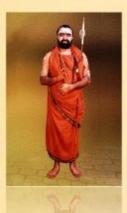
रुर रुर मद्वर एय एय मप्नुर











म्-वेर्म्य नभ

मीभर्ग-ग्रम्-मद्भग-रुगवस्य-परभुगगउ-भुलाभाव-भवः पी०भा म्-िक मु-िक भके ए-पी०भा स्गमुर-मी-मद्भग्राट-भ्राभि-मीभ०-भंभूपनभा

॥म्-मद्भग-विष्यवन्-भगभुडी-म्यिग्य-लभ्-प्रष्-**पमू** डिगा

५०३२ तेणी—मुभः-०३ / मा द्वर-मंबद्धरः ३५३३ (25.02.2025)

(ग्रगभ्) [विष्मुम्वरप्रं मुङ्गा]

> मुक्ताभगणां विभूमिनवंक परुदुस्भा। प्भन्वरनं पृष्वेडा भवविभूपमानुचे॥

प्पारी मुयभा है हुः + हुमुवः मुवरेभा। (मप उपम्मु, पृप्तकराना गुर्जीङ्ग)

भभेपा इस भभु ए रिउब यक्षा रा मी पर सम्वर पी टुर्ग, मुरु मे रुन भूक र मार् वृक्षणः म्विडी यपरा च मुउवरा फकले, वैवभुउभव नुरे मक्षाविम उउमे किल युगे प्षमे पार ए भुद्वीप रारउवरे वॅम्-ण∓-मप्-परिपालन-मरुप

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**





रुर रुर मर्द्भर

हरडापर, मेरेः प्रकिल पाच्च मिम्ना वर्गन वृतकारिकाल प्रवापीनं प्रृष्टः मंवद्भगल भण्न केणि-नाभ-मंवद्भग उर्श्वाचल मिम्ना-एउँ कुभ-भाष-भाम कुभ -पब स्वाप्त (०३:५) मुरुडिचे हैं भवाभर व्काचामा उर्शाधाप्त-नब इव्काचं वृडीपाउ-चेग (०३:०३; वर्गचे -चेग); वर्गचे -चेग; परिष्ण-चेगच्काचं उँडिल-करल (०३:५) मुरुडिचे मीपर मेम्रापी इर्गमा एवं-गुल-विमिधाचामा मृष्टं स्वाप्त प्रकृति (०३:५) मुरुडिचे मीपर मेम्रापी इर्गमा

- उड़राधारा-नब्द् एन्रामे मुविदुडानं मीभडा-मद्भर-विर्व्वन्-मरभुडी-भंवभीन्एणभा मभूकं एगमुदुणं सीद्भ-म्वः-म्रेग्-मिम्नुद्रं भठादिप्रम्न्ती-ममंडे एन्भेलीम्वरं भभ्दू,
- ० उँः भद्गलियानं भन्नेषं लेक-बिभार्-काराणं वर्म-माभुक्ति-मभ्राय-पेषणं-काराणं विविण-बिद्-यादायाम् मविभुउया मभ्रार्
- ० का भके एि-गुरु-पर भुरा यां का भके एि-रुरु-ए ना ना भा मा मुल-रावमुमू-म्, म्डउर-रुरि-भिमूर्त, परभुर-लिकभट्ट-भिमूर्त,
- ठाउँ वानं भलासनानं विभ्न-नितृ हि-पृत्तक-मङ्काद्य-पृतृ हि-म्वा विभ्न-नितृ हि-पृत्तक-मङ्काद्य-पृतृ हिन्य-पृतृ भूति, ममङ्काद्य हुः नितृ हुः
- ठाउडीयानं भनुडः भनाउन-भभ्माय म्म्र-क्ट्रेः मिक्त्रमुं
- ० भविषं म्विपमं ग्रुपमा मिनुषं ग्र प्रिंग-वन्ताणभा म्वेग्-युक्-भाष-स्तिवन-मवापुक्तभा
- ग्रम्मकं मठ-तुएभ्वानं एम्नग्र-काभ-भेष-ग्रुप-ग्रउतिए-प्रधार-मिष्टुरं विवेक-वैगण्-मिष्टुरं

मी-मद्भग-विस्विन्-भगभ्रडी-मीयग्ण-पीटुर्न मी-मद्भग-विस्विन्-भगभ्रडी-मीयग्ण-स्वरी-भन्नेद्भवे वषामित-पृप्त-मुक्तान्नार्य-भित्रमेपय्याः मी-मद्भग-विस्विन्-भगभ्रडी-मीयग्ण-प्रसं किष्टि। उद्यक्तं कलमप्रसं य किष्टि। [कलमप्रसं कुर्वाः]

वॅम्-णम्-माभु-परिपालन-मरा

॥प्टानभा॥

म्डिभ्,डिप्रण्णनाभा मल वं करण्णल वभा।

यस्र न उत्तरुन-पठिङानाः सञ्जविद्धेपद्मिः इं लेकान् रुवम्बिमापा-उपपपप्रभानान्। भुकु भीनं वहविहिभने भूलंडे निध्उनी मभैग्न ग्रिस् र डि <u> इ</u>वन मङ्गग्राट्युपा॥

> नभाभः मद्भगन्नापृ-विस्चन् भगभुडीभा। मीगुरं मिस्भा जान्तरारं भन्दिप्मभा॥

मी-मर्द्भग-विष्यवेत्-भगभ्रेडी-मीर्राग्यना पृथाभि मी-मर्द्भग-विष्यवेत्-भगभ्रेडी-मीग्रग्भा मुक्यानि।

म्-मर्रा-विष्येन्-भाभारी-म्। एरल्फ्रेनभः, ग्रुभनं भभन्याभा

म्-मद्भग-विष्यम्-भगभुडी-म्। प्राप्तिः माग्यं व्याप्ति प्राप्तिः माग्यं व्यापि प्राप्तिः माग्यं व्यापि

म्-मर्रा-विस्चिन्-भगभुडी-म्रीयगण्डे नभः, पारं मभन्याभि

मी-मद्भर-विष्यविन्-भरभ्रडी-मी एरल्ले नुभः, मुद्धं मभर् वाभि

म्-मर्रा-विष्यवन्-भाभारी-म्याप्याप्ये नभः, म्याभनीयं मभन्याभा

मी-मर्द्भग-विष्यवन्-भगभुडी-मीछगल्किन्भः, भएपद्वं मभन्वासी

म्। मुप्रा-विष्युन् भरभुडी-म्। प्रान्ते नभः, भूपयाभि भूतात्रुगभा ग्राप्तिनीयं

मभर्याभा

मी-मद्भर-विष्येन्-भरभुडी-मीछरल्रें नभः, वध्ं मभर्यामा

म्। मर्रा-विष्येन्-भाष्ये दी-म्। प्रान्ये ने नभः, यक्षेपवीउं मभन्या भि।

मी-मद्भग-विस्चिन्-भगभुडी-मीछगल्हे नभः, मिब्धिरिभलगन्नाना णगयाभि।

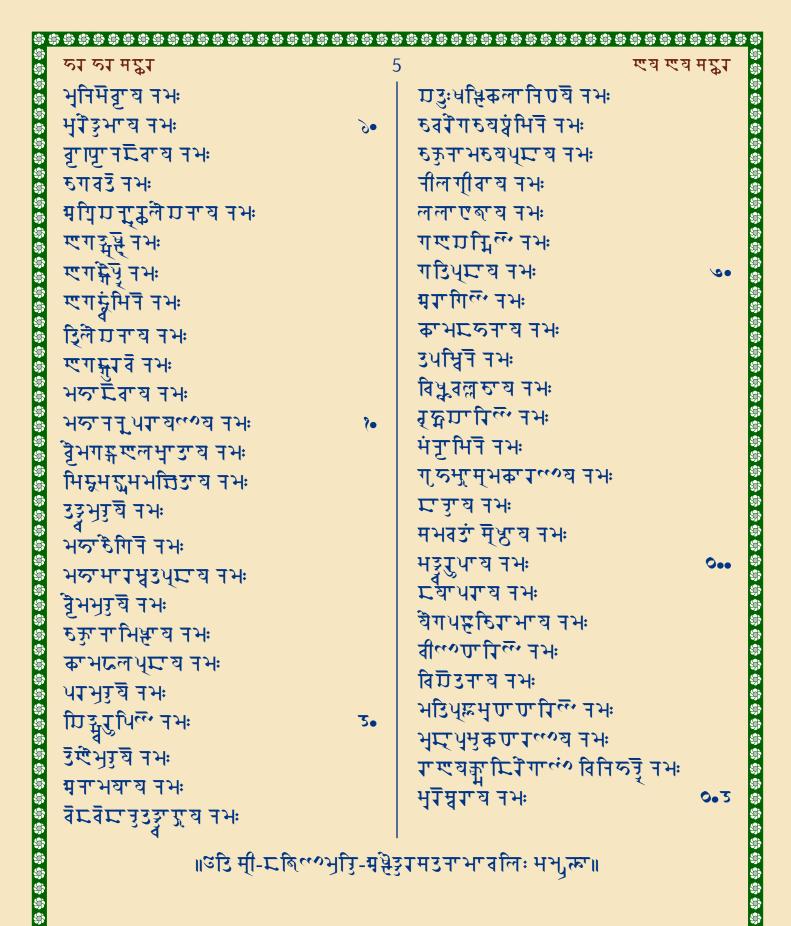
गत्रभृपित जिस्कुर्भं मभर्याभा

मी-मद्भग-विष्यवन्-भगभ्रडी-मीग्रगल्के नभः, महराना भभन्याभि। प्रेषः प्रस्याभि।

वैर-एर्-माभु-परिपालन-मरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**

vdspsabha@gmail.com vdspsabha.org



वैद्य-एप्-माभु-पविपालन-मङा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**



मुग्राट परभुरानाभावतिः

॥ भुकामाराः॥

- 1. मीभउँ मिक्णभुरुच नभः
- 2. मीभउँ विभूत नभः
- 3. मीभउँ रुक्तर नभः
- 4. मीभउँ विभिष्ठाय नभः
- 5. मीभउँ मकुच नभः
- 6. मीभउ परामराय नभः
- 7. मीभउँ ब्रामाय नभः
- 8. मीभउँ मुकाय नभः
- 9. मीभउँ गैं उपामा व नभ
- 10. मीभउँ गैविन् रुगवसुराय नभः
- 11. मीभउँ मद्भारुगवश्वास्य नभः

॥ रुगवश्चम्मिधृः॥

- 1. मीभउँ भुरमुरा घाटा व नभः
- 2. मीभउँ पम्भपारागाराय नभः
- 3. मीभउँ जभुभनका गाराच नभ
- 4. मीभउँ उएका गाउर य नभः
- 5. मीभउँ प्षिवी एवा ग्रास्य नभः
- 6. मीभउँ भवद्भद्भुत्रम् समू है नभः
- 7. मनुष्टुः मञ्करकगवस्य म-मिर्मृष्ट्रे नभः

॥ काभकेरि-मुग्रासः॥

- 1. मीभउँ मद्भारतगवश्चाराय नभः
- 2. मीभउँ भ्रेष्ट्रगणद्य नभः
- 3. मीभउँ भन्न इन्डन् भरभुटैं नभः

वें म- एम्-माभु-परिपाल न-मरु

© 9884655618 **Д** © 8072613857 **Д** wdspsabha@gmail.com **© vdspsabha.org**

- 4. मीभउँ भट्टने ए-उन्, भरभुटैं नभः
- 5. मीभउँ ह्रनातन्-उन्मग्नुहै नभः
- 6. मीभउँ मुसू नन्-उन्, भरभुट्टै नभः
- 7. म्भिउ ग्रनन्द्रन-उन्भगभृष्टै नभः
- 8. मीभउँ कैवलु नन्-उन्मगभुटै नभः
- 9. मीभउँ क्षामङ्ग-उत्मग्नभुट्टै नभः
- 10. मीभउँ विम्नसुप-भूगम्बर-छन्,भरभुटैँ नभः
- 11. म्भिउ मिक् नन्-ग्रिस्न-उन्भगस्ट नभः
- 12. म्भिउ भावकेभ-ग्रन्मोपर-उन्भरभुट्टै नभः
- 13. मीभड़े कार्रभी न-मिसुसून-उन्भगसृहै नभः
- 14. मीभउँ हैरविष्या-विम्यू भन-उन्भरभुटै नभः
- 15. मीभउँ गी५िउ-गङ्ग एर-उन्, भरभुट्टै नभः
- 16. मीभउँ उङ्गुलमङ्गर-उन्भगभुट्टै नभः
- 17. मीभउँ गे र-भम्म मिव-उन्,भगभुट्टै नभः
- 18. मीभउँ भुग-उन्, भगभुटै नभः
- 19. मीभउँ भारतपुर-विम्हाभन-उन्, भरश्रु है नभः
- 20. मीभउँ भुकम द्वर-७न् भरभुट्टै नभः
- 21. मीभउँ एक्वी-छन् छन् भगभुट्टै नभः
- 22. मीभउँ परिपुरूबै ए-उन्मरभुट्टै नभ
- 23. मीभउँ मिस्सुग्प-उन्मगसुटैं नभः
- 24. म्ीभउँ केंद्रुः ग्रेग्युग्य-उन्मग्यु व नभः
- 25. मीभडें मिस्स्यानन्थन् भग-उन्मग्रसृ नभः
- 26. मीभउँ प्रस्थन-उन्मग्रभुट्टै नभः
- 27. म्भिउँ ग्रिम्बिल भ-उन्भग्रसृटै नभः
- 28. मीभउँ भका रिव-उन्, भरभुट्टै नभः
- 29. मीभउँ पुरूबे ए-उन्, भगभुट्टै नभः
- 30. मीभउँ रुक्तिवेग-वेण-अन्भागभृष्टै नभः
- 31. मीभउँ मील निणि-इङ्ग नन्भन-उन्भग्रसृटैं नभः

वॅं़⊏-णग्न-मेर्ग्य-पियालन-मरु

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**



52. मीभउँ मञ्करानन्-उन्,भगभृटै नभः

० मीभउँ महैँ उर्द्धान नुव नभ

० मीभउँ विम् उष्ण्य नभः

० मनुष्टः विम्येडी रू-मक्करान नू-मिर्चेष्टे नभः

53. मीभडे पुरूषनन्-भम्यामिब-छन्-भगभूडे नभः

54. मीभउँ बृप्पागल-भक्ताः व-उन् भगभुट्टै नभः

55. मीभउँ छन् छर-उन्भगभुट्टै नभ

56. मीभडें भरामिकी ए-उन्भगसृहै नभः

 \mathcal{L} -मप्प-परिपालन-मरुप

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**

🔽 vdspsabha@gmail.com 🛭 😵 vdspsabha.org

रुर रुर मर्द्धर

57. म्भिउ परभमिव-७न्, भरभृट्टै नभः

- ० मीभउँ भम्मिवरक्र-उन्भगभुट्टै नभः
- 58. मीभउँ विम्नाणिक-मुद्भवैण-अन्,भगभुटैँ नभः
- 59. मीभउँ रुगवज्ञाभ-वैष-उन्,भरश्वट्टै नभः
- 60. मीभउँ मर्ह्वै उन्हाप्काम-उन्नामसृहै नभः
- 61. मीभउँ भका द्विन उन्न भगभुट्टै नभ
- 62. मीभउँ मिवगीउभाला-ग्रन्मापर-उन्भरभुट्टै नभः
- 63. मीभउँ भका द्वि उन् भगभु है नभः
- 64. मीभउँ छन् मापर-उन्भरभुट्टै नभः
- 65. मीभउ मुम्मन-भकामेव-उन्मगभुट्टै नभः
- 66. मीभउँ छन् मापर-उन्भरभुट्टै नभः
- 67. मीभउँ भका द्वित-उत्तामगभुट्टै नभः
- 68. मीभउँ छन् मापर-उन्भरभुट्टै नभः
- 69. मीभउँ एचन् भगभुट्टै नभः
- 70. मीभउँ मद्भगविष्यवैन्भगभुट्टै नभः

म्-मर्रा-विष्येन्-भगभ्री-म्। एरल्के नभः, नानाविष्परिभलपर्प्षाल्य मभर्याना म्-मद्भग-विष्यवन्-भगभुडी-म्। एपगण्पयानि म्।-मर्रा-विस्चिन्-भगभुडी-म्। प्रान्ते नभः, मीपं मचाभि। म्। मार्च निवस्य न् भार भारती मिया मिर्ग में निवस्य भि निवेद्यान नुरभा ग्राभनीयं मभर्याभा म्-मद्भग-विष्ययन्-भगभ्री-म्। एरल्फ्रिनभः, कर्तरङभूलं मभर्याभा म्-मर्रा-विष्येन्-भगभुडी-म्। प्रार्वे नभः, भन्नल नीराष्ट्रं एक्या भि। मी-मद्भग-विष्यवन्-भगभुडी-मीग्रगलकृतभः, प्राविल्यनभुग्नाना मभन्यामि। मी-मर्रा-विष्येन्-भाभागी-मीग्रान्पेत्रे नभः, प्रानः भभर्याभा

वैम्-णग्न-माभु-परिपालन-मरा

॥भ्रुपि-वग्रनभा॥

- ० भ्रिम् म्रिम्पा-म्रापल-रुभएलाल इ.ग-३विष्ट्मिट्या-केए-म्विड-म्रिकाभाषी-म्रित-भनाष-म्रिम्पा-एकाभ्नाष-म्रित-भनाष-म्रित-भनाष-म्रित-काभाषिप्रान-भट्टव्ड-नाभाष्ठिड-काष्ट्री-म्रित्व-क्र्इ मारम्पर-म्रितानाभा
- गडलि उ-मण गम-भण्य-कभलाभन-काभिनी-णिभूल्ल-मभूल्ल-भिल्ला का-भालिका-निः धृन्-भकगन्-ग्रिगी-भेषिक-काष्ट्रिगुभू-विष्णुभुः श्रिन्-विउ-भनीषि-भग्रलानाभा
- ० मनवर उद्विउ-विम्ट-विनेम्-रिभकानं निर तराल सु उत्तिउ-मा ति-म्य ति- हुभाभा
- ० मकल-इवन-ग्रन्-प्रिष्ठापक-मीग्रन्-प्रिष्ठा-विाष्ट्रा उ-चमें ल रू राना भा
- ० निर्मित-भाषपुर-भपुर-कस्'केश्चाएनन विमम्मीक्तुउ-वेम्-वेम्प्रचु-भाज-भप्पुउ-भ्रिष्ठाभकामाराणभा
- ० परभन्नं भ-परिवृष्टका या द वद-एग मुह-मी भड़ा-म द्वर हग वश्व या या या प्रभा
- गणिश्च मिंकामनािकिषकु-मीभ्या-एत्मापरत्नम्यग्वी-मीपार्यानाभा गर्ने-वािभवरः-मीभ्या-एचत्-मगभ्री-मीपार्यानाभा गर्नेवािभवरः-मीभ्या-मञ्चर-विएचत्-मगभ्री-मीपार्यानां एरण्य-निलन्धः मप्म्यं भाक्किवतं ए नभ्युक्तः॥

॥उँएका स्कर्भा॥

विध्यापिल-मम्-मण-एलण भित्रिपनिधर्ग-किषयः रू-निण। रूप्य कलय विभलं ग्रापं रुव मह्मर प्रमिक में मगणभा॥॥॥

करण-वरण्णव पालय भंग ठव-भागर-म्शप-विम्न-कम्भा। राग्यापिल-म्मन-उर्ड-विम् ठव मद्भर मिक मे मरण्भा॥॥

वें म- ए म्-मा भु-पि पाल न-म रा

© 9884655618 **♦** © 8072613857 **♦** wdspsabha@gmail.com **© vdspsabha.org**

रुवडा एनडा मुलिडा रुविडा नि ए- वे ए- विया पण- या १ - भउ। कल चम्रा-ग्टीव-विवैक-विमं ठव महूर हिमिक में मरणभाशा

ठव एव ठवानि । निउगं मभए यउ 🗓 उमि के उकि उ। भभ वार्य भेठ-भठा-एल पि ठव मद्भग रिमिक मे मगणभी॥मा

मुन्डे, पिन्डे वकण हर्वेडे रुविडा भभ-ममन-लालभडा। मिउमीनिभं परिपालय भं ठव मद्भर मिक मे मरणभाषा

एगडीभिवेडं कलिउ कुउंचे विग्रानि भन्न-भन्भमुल उः। मिलिभं मुरिवा ३ विष्टा भि पुरे ठव महुर दिमिक मे मरणभागा

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केउन उ मभउ भवउं न कि कें, पि मृणी। मर १०० गउ-व इन्ल उड़-नि ए ठव मद्भार मिक मे मरणभाशा

विमि उ न भया विम मैं क-कला न ग्र किञ्चन क ञ्चनभि ग्री। म्उमेव विचिन्ति मुपं मन्दं ठव महुर हिमिक मे मरणभाग ॥ इंडि मी उरका गार विरिग्धि मी उरका सकं मभुक्तभा॥

> एव एव मद्भा ठा ठा मद्भा एव एव मद्भा का का मद्भा। काम्नी-मद्गा काभकेए-मद्गा ठा ठा मद्भा एव एव मद्भा॥ वैद्य-एग्य-माभ्-पविधालन-भरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**

कचिन बाग्रा भनमित् चैंबा ब्रम्पप्टा अस्त वर प्तु उः भ्रष्टा वर उत्। करें भि यमु उर् भकलं परम् नग्य वल्ले चिडि मभर् या भि॥ मनेन प्रस्तेन मी-मर्द्भर-विस्येन्-भरभुडी-मीछर ११ यमुभा छै उद्ममूक्तर्भागु।

वैर-एर्-मप्-परिपलन-मरा